पुष्पांजलि

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक पत्रिका

दिसम्बर 2020

जीवन का बसन्त

VISIT…

पुष्पाँजलि

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक पत्रिका

वर्ष 1, अंक 8/दिसम्बर 2020

संपादक :
गोविन्द मूँदड़ा

परामर्श मंडल :
डॉ. विष्णु सक्सेना
डॉ. सुरेश अवस्थी
डॉ. कीर्ति काले
बी.एल.आच्छा

विस्तारक मंडल :
राम मूँदड़ा - द कटपेस्ट.कॉम, इंदौर
राजेश मानव - नई विधा, नीमच
मोहनलाल बजाज - पल्लव टाइम्स, चेन्नई
चिराग जैन - कविग्राम, नई दिल्ली

संदीप राशिनकर - रेखांकन
विवेक अग्रवाल - शब्द संयोजन

प्रकाशक
गिरिराज मूँदड़ा

संपर्क :
8610502230 (केवल संदेश हेतु)
send@pushpanjalee.com
www.pushpanjalee.com

प्रकाशन स्थल : चेन्नई

मूल्य :
मात्र आपकी मुस्कान

पुष्पांजलि की विशेषताएँ

जहाँ जहाँ ये चिह्न हैं, उन्हें क्लिक कर
आप उस लिंक को खोल सकते हैं।

विडिओ

इस चिह्न को क्लिक करने से
आप वीडियो खोल पाएँगे

ऑडिओ

इस चिह्न को क्लिक करने से
आप ऑडियो रिकॉर्डिंग सुन पाएँगे

पुस्तक

इस चिह्न को क्लिक करने से
पुस्तक का पूरा PDF खुल जाएगा

व्हाट्स ऐप

इस चिह्न को क्लिक करने से आप
हमारे व्हाट्स ऐप पर सीधे जुड़ सकेंगे

वेब साइट

इस चिह्न को क्लिक करके आप
सीधे उस वेब साइट पर जा सकेंगे

पुष्पांजलि एक संग्रहणीय पत्रिका है, अत: आप ☆ स्टार चिह्न
द्वारा अपने मोबाइल में सुरक्षित रख सकते हैं।

ओशो

ओशो एक रहस्यदर्शी विचारक हुए मगर वे अत्यंत विविदास्पद भी रहे। भारतीय दर्शन में सन्यासियों की जो छवि है उसमें वे 'सेक्स' पर अपने प्रवचनों के कारण व एक सन्यासी का कीमती कारों, हीरे जड़ित टोपियों व घड़ियाँ रखने की रुचि के कारण वे समाज द्वारा विरोध का कारण बने।

इन सबके बावजूद उस बुद्ध पुरुष के चिन्तन में गजब की मौलिकता व समाज को क्रांति की दिशा में ले जा पाने की सशक्त क्षमता थी। देश की एक बड़ी पत्रिका के सर्वेक्षण में उन्हें पिछली शती के १०० विशिष्ट व्यक्ति जिन्होंने देश वासियों को बहुत प्रभावित किया में शामिल किया।

ऐसी मान्यता है कि गीता व बाइबिल के पश्चात् उनके प्रवचनों की पुस्तकें ही सबसे ज्यादा संख्या में व विश्व की कई भाषाओं में प्रकाशित हुई।

'ध्यान' पर उन्होंने कई प्रयोग किए। इस अंक से हम एक नया स्तंभ ध्यान-विज्ञान प्रारंभ कर रहे हैं जिसमें उनकी एक ध्यान पद्धति प्रेषित की जाएगी।

उनकी 'जयंती' के अवसर पर हम अपने पाठकों को उनकी एक पुस्तक 'ध्यान विज्ञान' का लिंक भेंट कर रहे हैं, आशा है इसका स्वागत होगा।

पुष्पांजलि अब मासिक

पुष्पांजलि का प्रकाशन मोबाइल साइज के मात्र १६ पृष्ठों से प्रारंभ हुआ। अंक दर अंक पाठकों की संख्या व उनके सुझावों से इसकी उत्तरोत्तर प्रगति होती रही और अब यह ३२ पृष्ठों की व कई नए स्तंभों वाली पत्रिका बन गई है।

पाठकों की रुचि व प्रतिक्रियाओं को देखते हुए हम इसके वर्तमान स्वरूप में कोई कटौती नहीं करना चाहते, मगर अभी हर १५ दिनों में इसे प्रकाशित करना थोड़ा असुविधापूर्ण लग रहा है। अत: इसे अब मासिक कर देने का निर्णय लिया गया है।

आशा है इस निर्णय में आप हमारे साथ होंगे।

ओशो

जन्म : ११ दिसम्बर

ओशो

अस्तित्व में बुढ़ापा होता ही नहीं

अस्तित्व में तो परिपक्वता है, प्रौढ़ता है

मेरी खिड़की के बाहर एक पुराना पेड़ है। पूरी बरसात भर वह नाचता रहा है, और उसके पत्ते जब गिरते हैं तो उनमें भी एक गरिमा है, एक सौंदर्य है। न सिर्फ वह पेड़ बरसात में हवा के झोंकों के साथ नाचता है बल्कि उससे टूटकर अलग हो रहे पत्ते भी नाचते हुए गिरते हैं। उनके गिरने में भी एक उत्सव है।

पूरे अस्तित्व में मनुष्य को छोड़कर और कहीं कोई बुढ़ापा नहीं है। अस्तित्व में बुढ़ापा होता ही नहीं है। अस्तित्व में तो परिपक्वता है, प्रौढ़ता है। एक समय होता है नाचने का, पूरी सघनता से नाचने का, और फिर आराम का समय आ जाता है।

मेरी खिड़की के बाहर जो बादाम का पेड़ है, उसके गिरते हुए पत्ते मर नहीं रहे, वे विश्राम में जा रहे हैं। जिस धरती से वे जन्में, उसमें वे वापस लौट रहे हैं। इसलिए उनके गिरने में कोई उदासी, कोई दुःख नहीं है। उनके गिरने में ऐसा लगता है जैसे वे हमेशा के लिए विश्राम में जा रहे हों। शायद फिर कभी, किसी और दिन वे किसी और पेड़ पर किसी दूसरे रूप में उग आएँ। तब वे फिर नाचेंगे और फिर गायेंगे, तब वे फिर से अपने होने का उत्सव मनायेंगे।

लेकिन मनुष्य इतना बेहोश है, इतना सोया हुआ है कि उसे यह सीधी-सी बात नजर नहीं आती। ज्यादा भी नहीं, थोड़ा-सा होश हो तो तुम देख पाओगे कि तुम हर क्षण बदल रहे हो; और परिवर्तन का अर्थ है कि कुछ मर रहा है, कुछ नया जन्म ले रहा है। तब जीवन

अगले पृष्ठ पर...

और मृत्यु एक हो जाते हैं; बचपन की सरलता और बुढ़ापे की सरलता एक जैसी हो जाती हैं। दोनों अवस्थाओं में फर्क है, लेकिन कोई विरोध नहीं।
बच्चे की सरलता तो दरिद्र है क्योंकि उसमें अज्ञान है। वृद्ध व्यक्ति, जो परिपक्व हो गया है, जो अंधेरे व उजाले के और सुख व दु:ख के सारे अनुभवों से गुजर चुका है, जो जीवन की अलग-अलग परिस्थितियों के अनुभव से प्रौढ़ हो चुका है, वह ऐसी स्थिति में आ जाता है जहाँ फिर किसी अनुभव का वह भागीदार नहीं रहता। दु:ख आता है तो वह दु:ख को देखता है, और जब सुख आता है तो वह सुख को देखता है। वह द्रष्टा है। वह द्रष्टा बन जाता है, जैसे पर्वत के शिखर पर खड़ा कोई सब कुछ देख रहा हो। अंधेरी घाटियों में चीजें चलती रहती हैं, लेकिन वह अपने शिखर पर मौन खड़ा सब देखता रहता है।

बूढ़ा होने का विचार ही तुम्हें भयभीत कर देता है। बुढ़ापे का अर्थ तुम लेते हो कि अब तुम्हारे जीने, प्रेम करने के, आनंद मनाने के दिन समाप्त हुए; कि अब तुम नाम-मात्र को ही जीओगे। अब तुम्हारे जीवन में कोई आनंद नहीं होगा, बस तिल-तिल करके तुम अपनी कब्र की ओर खिसकोगे।

बुढ़ापे की चिंता लेने की कोई जरूरत नहीं है। वह तो तुम्हारी परिपक्वता है; तुम हर अनुभव से गुजर कर आए हो। तुम इतने अनुभवी हो चुके हो कि उन अनुभवों से बार-बार गुजरने की अब तुम्हें कोई जरूरत नहीं है। इसे अतिक्रमण कहते हैं।

तुम्हें आनंदित होना चाहिए, और मैं चाहूँगा कि पूरा संसार इस बात को समझ ले कि बुढ़ापे को, और अंतत: मृत्यु को अहोभाव से स्वीकार करना तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। अगर तुम्हारी मृत्यु गरिमापूर्ण न हो, अगर तुम उस पर हँस न सको, अगर तुम हँसते-हँसते शाश्वतता में विदा न ले सको तो तुम ठीक से जीये ही नहीं। तुम गलत लोगों के पीछे चलते रहे। भले ही वे तुम्हारे मसीहा रहे हों, तुम्हारे तीर्थंकर रहे हों, तुम्हारे अवतार रहे हों, लेकिन वे सब अपराधी हैं क्योंकि उन्होंने तुम्हें जीवन से वंचित किया और तुम्हारे हृदय को भय से भर दिया।

पंडित प्रदीप

पुण्य तिथि ११ दिसम्बर

'एक मेरे वतन' जैसे अमर गीतों के रचयिता जिसे सुनकर पंडित जवाहरलाल भी रो पड़े थे। कई फिल्मों में लिखे गीत जो आज भी सामयिक हैं।

कभी कभी खुद से बात करो

कभी कभी खुद से बात करो,
कभी खुद से बोलो।
अपनी नजर में तुम क्या हो?
ये मन की तराजू पर तोलो।
कभी कभी खुद से बात करो
कभी कभी खुद से बोलो।

हरदम तुम बैठे ना रहो –
शौहरत की इमारत में।
कभी कभी खुद को पेश करो
आत्मा की अदालत में।
केवल अपनी कीर्ति न देखो –
कमियों को भी टटोलो।
कभी कभी खुद से बात करो
कभी कभी खुद से बोलो।

दुनिया कहती कीर्ति कमा के,
तुम हो बड़े सुखी।
मगर तुम्हारे आडम्बर से, हम
हैं बड़े दु:खी।
कभी तो अपने श्रव्य भवन की
बंद खिड़कियाँ खोलो।
कभी कभी खुद से बात करो
कभी कभी खुद से बोलो।

ओ नभ में उड़ने वालो, जरा
धरती पर आओ।
अपनी पुरानी सरल-सादगी
फिर से अपनाओ।
तुम संतों की तपोभूमि पर मत
अभिमान डालो।
अपनी नजर में तुम क्या हो?
ये मन की तराजू में तोलो।
कभी कभी खुद से बात करो
कभी कभी खुद से बोलो।

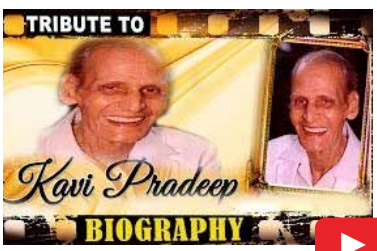

पंडित प्रदीप से एक सशक्त साक्षात्कार का विडियो

भारत भूषण

पुण्य तिथि : 17 दिसम्बर

'हिन्दी के आभूषण' से सम्मानित प्रसिद्ध गीतकार-कवि भारत भूषण जी हिन्दी प्रवाह में जनमानस को सराबोर करने वाले कवि के रूप में प्रख्यात हुए। उनका 'राम की जल समाधि' गीत गीतिकाव्य में मील का पत्थर है।

मन! कितना अभिनय शेष रहा

मन!

कितना अभिनय शेष रहा
सारा जीवन जी लिया, ठीक
जैसा तेरा आदेश रहा।

बेटा, पति, पिता, पितामह सब
इस मिट्टी के उपनाम रहे
जितने सूरज उगते देखे
उससे ज्यादा संग्राम रहे
मित्रों मित्रों रसखान जिया
कितनी भी चिंता, क्लेश रहा।

हर परिचय शुभकामना हुआ।
दो गीत हुए सांत्वना बना
बिजली कौंधी सो आँख लगीं
अँधियारा फिर से और लगा
पूरा जीवन आधा-आधा
तन घर में मन परदेश रहा।

आँसू-आँसू संपत्ति बने
भावुकता ही भगवान हुई
भीतर या बाहर से टूटे
केवल उनकी पहचान हुई
गीत ही लिखो गीत ही जियो
मेरा अंतिम संदेश रहा।

देवल आशीष

काव्य की सिंघावलोकन की विधा में पारंगत गीतकार, जिनके राधा-कृष्ण पर लिखे छंदों का कोई सानी नहीं। बहुत ही अल्पायु में ही हमारे बीच से चले गए। साहित्य के काव्य जगत के इस अनूठे कवि को पढ़ना व सुनना दोनों सुखद होंगे।

फूल पत्थर पर चढ़ाकर लौट आए

यूँ भरम दिल को दिलाकर लौट आए
फूल पत्थर पर चढ़ाकर लौट आए

वो, कि जिसकी देन है धड़कन दिलों की
खोज में उसकी, पलटते हैं शिलाएँ
ग्रन्थ के सब सार तो सीखे लगन से
पर नहीं समझे दु:खी मन की व्यथाएँ

पाठ दुनिया को पढ़ाकर लौट आए
परकटे पंछी उड़ाकर लौट आए

लोभ मन में लाभ का हर पल प्रबल है
भाल पर लेकिन सजा है लाल टीका
क्या करेंगे आचरण अपना बदल कर
पाप धोने का सरल है जब तरीका

पुण्य भी संग में कमाकर लौट आए
भक्तजन गंगा नहाकर लौट आए

देवल आशीष के चुनिंदा
काव्य-पाठ का अद्भुत संकलन

क्या आप 'पुष्पांजलि' नियमित प्राप्त करना चाहते हैं ?

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचालित रूप से हमें पहुँच जायेगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

यदि आप किसी कारण से चिह्न द्वारा संदेश नहीं भेज पाए तो निम्नलिखित वाट्सएप नंबर द्वारा अपना संदेश भेजें।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

मूल्य :

मात्र आपकी मुस्कान

डॉ. गुलाब कोठारी

प्रबुद्ध चिंतक, संवेदनशील लेखक एवं प्रतिबद्ध पत्रकार डॉ. गुलाब कोठारी, राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान संपादक हैं।

संप्रेषण

क्या सूर्य के बिना जीवन संभव है? अथवा पृथ्वी के बिना हमारा कोई दूसरा आश्रय है। हमारा स्वरूप ब्रह्मांड की कृति है। सच तो यह है कि प्रकृति की हर वस्तु भी ब्रह्मांड के रूप ही हैं। पेड़ को देख लीजिए, ब्रह्मांड की तरह एक संपूर्ण इकाई के रूप में खड़ा है। जो कुछ जड़ में पहुँचता है वह पेड़ के हर एक अंग को पहुँचता जाता है। डाली, पत्ता, फूल, फल आदि सबको अपना-अपना हिस्सा प्राप्त हो जाता है। क्या कभी किसी पत्ते ने शिकायत की कि उसको दूसरे पत्ते से कम मिला। इसके साथ ही देखने की और समझने की बात यह भी है कि कोई भी पत्ता स्वयं के लिए नहीं जीता। कोई भी फूल अपने लिए नहीं जी रहा। पूरा पेड़ मिलकर एक दिशा या लक्ष्य के लिए कार्य करते हैं। आज तो शरीर भोग की भेंट चढ़ गया। भोग भी एक तरह का मनोरंजन बन गया। सामूहिक उत्सव की तरह। पशु पक्षी प्रकृति की मर्यादा में जीते हैं। मानव मनमानी करता है। जीवन बाहर की ओर दौड़ने लगा। भीतर के द्वार बंद हो जाने से अपना स्वरूप ही भूल गया।

मानवता का अर्थ है आत्मा से समन्वित बुद्धि, मन, शरीर भावों की यथास्वरूप व्यवस्थिता। आज का मानव समग्र दृष्टि से जीता ही नहीं है। अत: शरीर से श्रांत, मन से क्लांत, बुद्धि से परिश्रांत एवं आत्मा से अशांत रह कर जी रहा है। मानव को संपूर्ण तुष्टि, पुष्टि, शांति स्वस्ति के लिए जिन चार पुरुषार्थों की व्यवस्था की गई थी वह भी छिन्न-भिन्न हो गई। शरीर के लिए अर्थ, मन के लिए काम, बुद्धि के लिए धर्म तथा आत्मा के लिए मोक्ष मार्ग तय किया गया था। आज अर्थ हावी हो गया धर्म पर, तथा काम भारी हो गया मोक्ष पर। शुद्ध अर्थ और काम पर जीने वालों को मानव कहना कितना उचित होगा? इस परिस्थिति से मुक्त होकर ही मानव जीवन सहज एवं शांत हो सकता है।

प्रकृति में स्त्री और पुरुष की भूमिका भिन्न होती है। स्त्री निर्माण करती है, पोषण करती है और सृष्टि की मूल भूमिका में भी दिखाई पड़ती है। उसका पुरुष के प्रति मातृत्व का भाव भी रहता है। पुरुष के साथ एक सपने को लेकर जीती है, यही उसके संप्रेषण की भूमिका और आधार बनता है। स्त्री बाहर कितनी भी कोमल दिखाई दे, भीतर पुरुष से अधिक कठोर होती है। उसके निर्णय आसानी से नहीं बदले जाते। जीवन के प्रति उसकी दृष्टि स्पष्ट होती है। यही उसके संप्रेषण की

सफलता का रहस्य है। २५ वर्ष तक गृहस्थाश्रम के साथ चलती है। एक ओर संतान का निर्माण और उसे संस्कारित करती है। अत: वह माँ भी है, शक्ति भी है और प्रकृति भी है। एक साथ अनेक कार्य कर सकती है, किन्तु मूल कार्य तो संप्रेषण ही है। उसे ५० की उम्र में निवृत्त हो जाना है। पुरुष का ध्यान कभी इस ओर नहीं जाता। प्रेम करने के लिए उसे स्त्री बनना पड़ता है। जो उसके अहंकार को स्वीकार्य नहीं होता। बुद्धि से लदा और प्रेम से शुष्क रहता है। अत: अकेलापन ही उसकी नियति बन जाती है। संप्रेषण को समझ ही नहीं पाता।

पुरुष का संप्रेषण अहंकार रूप में बुद्धि रूप में होता है। एक ओर बुद्धि मनमानी को नियंत्रित करने वाली होती है, वहीं दूसरी ओर ज्ञान का अहंकार भी पैदा करती है। यह चित्त को भ्रमित करने वाली है, अत: बुद्धि के नियंत्रण के लिए भी धर्म का अंकुश रखा गया है। आत्मा एक विश्व का परिवार है। वसुधैव कुटुम्बकम्। तुम ब्रह्म का अंश हो। ब्रह्म का लक्षण है फैलता रहने वाला, पोषण करने वाला। अत: बीज बनो, सृष्टा नहीं। जमीन में दबकर जिओ। पेड़ बन जाओगे। स्वच्छंद रह कर नहीं बन सकोगे। समाज को फल देना, छाया देना, आश्रय देना। तुम अपने फल खाने का प्रयास मत करना। अगली पीढ़ी आकर खाएगी। जो प्रकृति देती है, उससे अधिक पाने का प्रयास मत करना। पेड़ का कोई भी पत्ता ऐसा नहीं करता। यह मानवता का मार्ग नहीं है।

माता जीव से बाते करती है, कहानियाँ लोरियाँ सुनाती है। अपनी आत्मकथा, परिवार का इतिहास, अपने अधूरे सपने संतान से भावी अपेक्षाएँ बाँटती है। एक कुम्हार की तरह इस मटके को घड़ती है, पकाती है ताकि सौ साल तक चल सके। पके हुए घड़े को अब कोई दैविक शक्ति भी नहीं बदल सकती। हर माँ पेट में ही अभिमन्यु तैयार कर देती है। यह है मानव निर्माण में संप्रेषण की भूमिका। किसी भी नारी के जीवन में इससे बड़ी भूमिका और क्या होगी? लेकिन वर्तमान नारी इस भूमिका से अनभिज्ञ होती है। इसीलिए गर्भावस्था में संस्कारों का प्रशिक्षण पूर्णत: छूट जाता है। कई बार तो मद्य सेवन, तंबाकू सेवन आदि से शरीर को और भी विषाक्त कर लेती है। विष शब्द से ही विषय बनते हैं। गर्भकाल में यदि स्त्री विषयासक्त हो तो संतान वैसी ही होगी। अपंग भी हो सकती है। विचारों में दूषण प्रवेश कर जाता है।

हमारे मन की दो गतियाँ हैं। एक सृष्टि की ओर तथा दूसरी आनंदमुक्ति की ओर। मन जब सृष्टि साक्षी होता है, तब हमारे कर्म बाहरी विश्व से संबंध रखते हैं। जीव भोग करता बना रहता है। मन, बुद्धि, शरीर प्रकृति के तीनों मोह से अवतरित रहते हैं तथा सारा संप्रेषण मिथ्याभाव का नश्वर होता है। व्यक्ति इसी को सत्य मानकर जीता है। किन्तु निर्णय आत्मा पर लागू नहीं होते।

शुभम् भवतु कल्याणं।

योगराज प्रभाकर

मूलत: गजलकार। 'लघुकथा कलश' अर्धवार्षिकी के प्रधान संपादक। ओपन बुक्स ऑनलाइन डॉट कॉम – संपादक। पटियाला

पड़ाव

बहुत बरसों के बाद वह स्वयं को बहुत ही हल्का-हल्का महसूस कर रहा था। न तो उसे सुबह जल्दी उठने की चिन्ता थी, न जिम जाने की हड़बड़ी और न ही अभ्यास सत्र में जाने की फिक्र। लगभग डेढ़ दशक तक अपने खेल के बेताज बादशाह रहे रॉबिन ने जब खेल से सन्यास की घोषणा की थी तो पूरे मीडिया ने उसकी प्रशंसा में कसीदे पढ़े थे। समूचे खेल जगत से शुभकामनाओं के सन्देश आए थे। कोई उस पर किताब लिखने की बात कर रहा था, तो कोई वृत्त-चित्र बनाने की। उसकी उपलब्धियों पर गोष्ठियाँ की जा रही थी। किन्तु वह इन सबसे दूर एक शान्त पहाड़ी इलाके में अपनी पत्नी के साथ छुट्टियाँ मनाने आया हुआ था। इस शान्त वातावरण में वह भी पक्षियों की भाँति चहचहा रहा था। हर समय खेल, टीम, जीत के दबाव और सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करनेवाला रॉबिन प्राकृतिक नजारों में खो-खो गया था।

''देखो नन्दा, ये पहाड़ और झरने कितने सुन्दर लग रहे हैं।''

''अरे! आप कब से प्रकृति-प्रेमी हो गए?''

''शुरू से ही हूँ , जानू।''

''मगर कभी बताया तो नहीं आपने इस बारे में।''

''जिन्दगी की आपाधापी ने कभी समय ही नहीं दिया।''

जवाब में नन्दा केवल मुस्करा दी, फिर रॉबिन के चेहरे पर गम्भीरता पसरती देख उसने पूछा,''क्या सोच रहे हो?''

''सोच रहा हूँ, क्यों न हम भी महानगर छोड़कर यहीं आकर बस जाएँ?'' नन्दा का हाथ मजबूती से थामते हुए कहा।

''मगर हम करेंगे क्या यहाँ?'' नन्दा के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभर आए थे।

''थोड़ी-सी जमीन खरीदेंगे और उस पर फूलों की खेती करेंगे।''

''आपको जो चीफ सेलेक्टर की जॉब ऑफर हुई है, उसका क्या होगा?''

''मैं उनको साफ मना कर दूँगा।''

''ऐसा सुनहरी मौका हाथ से जाने देंगे? मगर क्यों?''

नन्दा का चेहरा अपने दोनों हाथों में भरते हुए रॉबिन ने जवाब दिया -''आज पहली बार गौर किया नन्दा, कि **तुम कितनी खूबसूरत हो!**''

राम मूरत 'राही'

साहित्य की अनेक विधाओं के रचनाकर्मी लघुकथा के क्षेत्र में कई प्रतिष्ठित सम्मानों से अलंकृत। इंदौर

ठिठुरते रिश्ते

दिल्ली की एक झोपड़पट्टी में दोनों भाई एक किराये के कमरे में रहते थे। उनके माता-पिता, पत्नी और बच्चे गाँव में थे। रात में नौकरी से आने के बाद रोटी बेलते हुए बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा-''छोटे! तेरी घरवाली को समझा देना, घर का काम बराबर नहीं करती है। आज तेरी भाभी का फोन आया था।'' ''भैया! मेरे पास भी शीला का फोन आया था। बोल रही थी जेठानी जी जरा-जरा सी बात पर डाँटती रहती हैं।''

''छोटे! वो बड़ी है, कोई गलती करने पर अगर डाँट भी दिया होगा तो क्या हुआ।''

''लेकिन भैया..।''

''लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। तू उसे समझा देना, बस।'' यह सुनकर छोटा भाई बड़े भाई से बहस करने लगा और फिर बहस इतनी बढ़ गई कि दोनों ने गुस्से में आकर गाँव के घर का बँटवारा करने की बात कही और यहाँ भी अलग-अलग रहने को कहा। फिर दोनों भाई चुपचाप खाना खाने के बाद गुस्से में पलंग पर एक दूसरे की तरफ पीठ फेर कर सो गए। ठंड हो रही थी। एक ही कंबल था, जिसे छोटा भाई ओढ़कर सो गया और बड़ा भाई टावेल।

रात में अचानक छोटे भाई की नींद खुली तो ठंड से बड़े भाई को ठिठुरता हुआ देखा तो उसने उन्हें कंबल ओढ़ा दिया और खुद टावेल ओढ़ कर सो गया। कुछ देर बाद बड़े भाई की नींद खुली तो उसने छोटे भाई को ठंड से ठिठुरता देखा तो उसे कंबल ओढ़ा दिया और खुद टावेल ओढ़ कर सो गया। इस तरह दोनों भाई की जब भी नींद खुलती तो वह एक दूसरे को कंबल ओढ़ा देते। जब सुबह हुई तो दोनों एक ही कंबल में थे।

बोलती लघुकथाएँ

डॉ. पद्मजा शर्मा

ऋतु कौशिक

शशि पाधा

ऋता शेखर मधु

अनिता ललित

उदय मेघानी

लघुकथा.कॉम से साभार

ज्ञान प्रकाश विवेक

हिन्दी के लोकप्रिय व चर्चित रचनाकार कई साहित्यिक पुस्तकें व हिन्दी गजलों पर एक आलोचना पुस्तक प्रकाशित। तीन बार साहित्य अकादमी से पुरस्कृत।

लड़ना-लड़ाना छोड़ दिया

समय के साथ अब लड़ना-लड़ाना छोड़ दिया
कि मैंने आग को पानी बनाना छोड़ दिया।

न वो संदूक, न छतरी, न जेब वाली घड़ी
मेरी हयात ने सब कुछ पुराना छोड़ दिया

न जाने कौन-सी जल्दी थी उन परिन्दों को
ज़मीं पे फैला हुआ आबो-दाना छोड़ दिया

बस और कुछ न किया मैंने एक उम्र के बाद
पिता की जेब से पैसे चुराना छोड़ दिया

हवाएँ पूछती फिरती हैं नन्हें बच्चों से
ये क्या हुआ कि पतंगें उड़ाना छोड़ दिया

किसी ने आँसुओं की सल्तनत मुझे दे दी
किसी के वास्ते मैंने ज़माना छोड़ दिया

बहुत घमंड था अपनी बुलन्दियों का उसे
कि आसमान का हमने घराना छोड़ दिया

अगर बड़े हो मसाइल तो रंजिशें अच्छी
ज़रा-सी बात पे मिलना-मिलाना छोड़ दिया

लोकेश शुक्ल

आशा के दीप

आशा के दीप तो जलाओ
कुछ ना कुछ तो प्रकाश होगा

टूट गए सपने तो क्या हुआ
रूठ गए अपने तो क्या हुआ
ये सब तो प्रेरक हैं, फूल हैं
मत समझो जीवन के शूल हैं
श्रम के संकल्प भी उठाओ
कुछ ना कुछ तो विकास होगा

मौसम ने यूँ बदले तेवर
दिशाहीन हो गए कलेवर
रक्त गंध ढो रहीं हवाएँ
छाती को चीर चीर जायें
माटी के गीत गुनगुनाओ
कुछ ना कुछ तो सुवास होगा

क्या होगा कल किसने देखा
मत डालो माथे पर रेखा
जो होगा अच्छा ही होगा
हमने तो ये मन ही भोगा
अपने किरदार को निभाओ
कुछ ना कुछ तो उजास होगा

आशा के दीप तो जलाओ
कुछ ना कुछ तो प्रकाश होगा।

**वरिष्ठ गीतकार व पत्रकार।
गीत, गजल व दोहों का संकलन
प्रकाशन में। कानपुर**

डॉ. लता अग्रवाल

**वरिष्ठ साहित्यकार एवम् शिक्षाविद।
साहित्य की विभिन्न विधाओं व बाल–साहित्य
में लेखन। भोपाल**

स्मृतियाँ

दिल के द्वार पर
दे दस्तक
गुहर अंधकार से निकल
गाहे–बगाहे चली आती है,
स्मृतियाँ।
सच, अतिथि होती है स्मृतियाँ।

सुबह की चाय में
शक्कर सी घुल जाती तो
कभी शाम की तन्हाई को
जवां कर आँखें नम करतीं।
बिना पूर्व सूचना दिए,
बिन आमंत्रण मिले,
आ धमकती हैं
अतिथि की तरह
चाहे जब बिन आहट के
सच, मनमौजी होती हैं स्मृतियाँ।

कभी स्मृतियों के धागे से
बुनकर जीवन में
तैयार करती हूँ आशाओं की चादर
स्मृति की अल्पना में हो रसभोर
मंद–मंद स्मित होठों पर
बरबस आ तैरते हैं मधुर गीत।

मन की बाम्बी में
स्मृतियों की चींटी जैसे
काटने लगती हैं;
खोए स्वप्न का कछुआ
बार–बार
गर्दन बाहर निकालने को
होता आतुर;
मन का कोमल पौधा
न चाहते हुए विचारों की आँधी में
इधर–उधर हिलने लगता है;
कुछ स्वप्न विस्मृति की गोद से
उछलकर समा जाते हैं गोद में मेरी।
और मैं खेलने लग जाती हूँ
न चाहते हुए उन स्मृतियों संग।

गर्भ में वापस लौटना

सोने से पहले बिस्तर पर बैठ जाएँ - आराम से बैठ जाएँ - और अपनी आँखें बंद कर लें। भाव करें कि शरीर शिथिल हो रहा है.. यदि शरीर आगे की ओर झुकने लगे तो झुक जाने दें; वह आगे झुक सकता है। शरीर गर्भ जैसी मुद्रा में आ सकता हौ - ठीक वैसी जब बच्चा माँ के गर्भ में होता है। यदि वैसा हो तो बस गर्भ की मुद्रा में चले जाएँ, माँ के गर्भ में छोटा बच्चा बन जाएँ।

और फिर केवल अपनी श्वास को सुनें, और कुछ भी न सुनें। बस श्वास को सुने-श्वास भीतर आ रही है, श्वास बाहर जा रही है, श्वास भीतर आ रही है, श्वास बाहर जा रही है। मैं इसे दोहराने के लिए नहीं कह रहा हूँ - बस उसे भीतर आता हुआ अनुभव करें; जब वह बाहर जा रही हो तो उसे बाहर जाता हुआ अनुभव करें। केवल उसे अनुभव करें, और उस अनुभव करने में ही आप एक गहन शांति और बोध का आविर्भाव अनुभव करेंगे।

यह ध्यान केवल दस से बीस मिनट के लिए है - कम से कम दस मिनट, अधिक से अधिक बीस मिनट - और फिर सो जाएँ।

ओशो

पुष्पांजलि का अपने पाठकों का उपहार

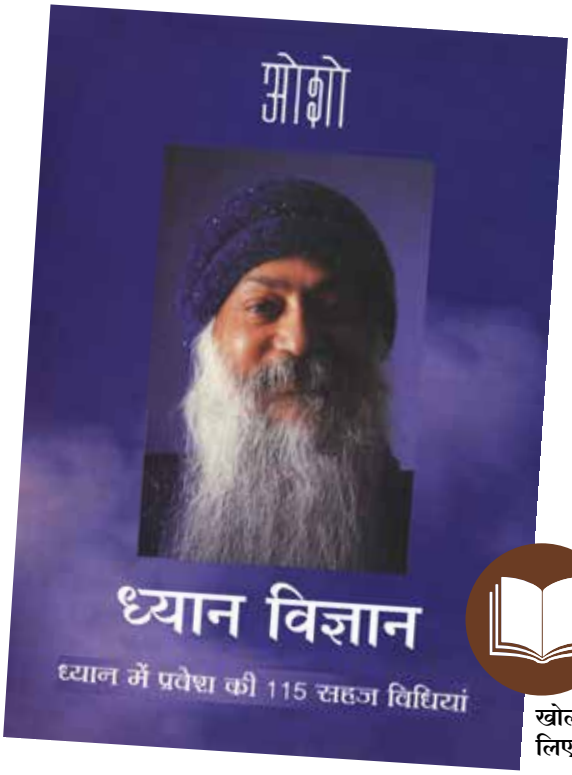

खोलने के
लिए क्लिक करें

इस पुस्तक का PDF लिंक भी अलग से भेजा जा रहा है

पुष्पांजलि

आपको अवश्य पसंद आयी होगी!

इस 'निर्मल आनन्द' में क्या आप अपने परिजनों व मित्रों को सम्मिलित नहीं करना चाहेंगे?

मात्र Forward ही तो करना है

रामकुमार राय

मुंबई महानगरपालिका में शिक्षक, लेखक व कवि। एक पुस्तक प्रकाशित। शिक्षण क्षेत्र में कई पुरस्कार।

ज्यादा मत सोचना...

सोचने बैठा हूँ
कि आज कुछ सोचूँ।
पर सोच नहीं पा रहा हूँ
कि क्या सोचूँ?
यह सोचूँ कि वह सोचूँ..
यहाँ की सोचूँ या वहाँ की सोचूँ..
सोचूँ भी या नहीं सोचूँ?
अगर सोचूँ तो केवल अपना
या दूसरों की भी सोचूँ?
अच्छा सोचूँ या फिर..
छोड़ो भी, जाने दो।
क्या होगा जो कुछ न सोचूँ?
यूँ भी सोचूँगा तो लोग सोचेंगे
कि मैंने यही क्यों सोचा?
तो लो, फिर नहीं सोचता।
पर नहीं सोचूँगा तो
सोच में पड़ जाऊँगा,
कि सोचता क्यों नहीं हूँ?
अच्छा! आज नहीं सोचता हूँ।
कल सोचूँगा कि क्या सोचना है।
आप भी सोचिएगा
कि अगर मैं कुछ न सोच पाया
तो आप मेरे बारे में क्या सोचेंगे?

डॉ. पिलकेन्द्र अरोरा

20 वर्षों तक विभिन्न महाविद्यालयों में वाणिज्य का अध्यापन। 'व्यंग्य प्रदेश' के संपादक। 32 वर्षों से प्रसिद्ध टेपा सम्मेलन का संयोजन। उज्जैन

कोरोनाकाल का नया शास्त्र-सार

उस रात मैं टीवी सीरियल महाभारत में कृष्ण-अर्जुन संवाद का एपीसोड देख सोया था। अचानक एक दिव्य वाणी सुनी,-''उठो वत्स! ये समय तुम्हारे सोने का नहीं है। देखो, कितने कोरोना रोगी, कितने वारियर्स और कितने उनके परिजन अभी भी जाग रहे हैं। कितने आइसोलेशन में और कितने क्वारंटीन में हैं, जिन्हें दहशत के कारण नींद नहीं आ रही है। कितने मजदूरों को दिन-रात, भूखे-प्यासे नंगे पाँव चलने के कारण नींद न आने की बीमारी हो गई है। और इधर एक तुम हो! यूँ सो रहे हो मानों वेक्सीन लगवा कर कोरोना से अभयदान पा लिया हो। उठो जागो!'' कोरोना का सुन मैं सकपका कर उठा तो देखा सामने टीवी वाले भगवान मुस्करा रहे हैं! मैंने प्रणाम किया तो बोले, आज मैं तुम्हें नया शास्त्र-सार सुना रहा हूँ वत्स, सुनो...!

शास्त्रों ने कहा था कि जीवन क्षणभंगुर है, जगत नश्वर है, पर तुमने एक न सुनी। ज्ञान-विज्ञान का बेसुरा गीत गाते रहे। और अब न्यूज चैनलों पर कोरोना स्कोर-बोर्ड देख जब तुम्हें साक्षात, अपनी ही अंतिम-यात्रा दिखाई पड़ती है, तब तुम्हें शास्त्रों का यह सत्य समझ आता है और तुम दहशत में आ जाते हो। इतनी दहशत, कि जब घर की कॉलबेल बजती है तो तुम्हें लगता है, कहीं ये साक्षात् काल की बेल तो नहीं! और तुम्हारी दहशत वायरस की मानिंद बढ़ जाती है। कहा था, ईश्वर की भक्ति करो। पर तुम जीवन भर फिल्म 'दीवार' के हीरो अमिताभ बच्चन बने रहे और मंदिर में दर्शन तो दूर कभी उसकी सीढ़ियाँ नहीं चढ़े। कहते थे, कौन भगवान! कैसा भगवान! सब बकवास है। आज कोरोनाकाल में 'कोरोना' जब 'काल' बनकर दहाड़ रहा है, तो तुम्हें कण-कण में भगवान दिखने लगे हैं और तुम पल-पल उसे याद कर रहे हो। जब मंदिर-गुरुद्वारे खुले हुए थे, तब तुम कभी गए नहीं। और जब लॉकडाउन में बंद हुए तो तुम उन्हें खुलवाने पर आमादा हो गए! वाह मनुष्य वाह! तुम्हारा जवाब नहीं। काश, तुमने भक्त कबीर की बात मानी होती और सुख में भी भगवान का सुमिरन किया होता। तो तुम्हारा और तुम्हारी आत्मा का इम्यूनिटी सिस्टम इतना कम न होता। वायरस का एकमात्र उपचार है, भक्तिरस। काश तुम समय पर जाग गए होते।

अगले पृष्ठ पर...

कहा था, मोह-माया से दूर रहो। पर तुम जीवन भर जर-जोरू-जमीन के जाल-जंजाल में उलझे रहे। भौतिकता की अंधी सुरंग में मैराथन दौड़ लगाते रहे। गाते थे, हर पल यहाँ जी-भर जीओ। कल हो न हो। और अब कोरोना में जब माया की छाया भी आइसोलेशन में चली गई तब तुम्हारा भोह भंग होना शुरू हुआ।
कहा था 'जल' में 'कमल' की भांति जीवन जिओ। पर तुम्हें तर-बतर रहने की आदत थी। और अब तालाब का पानी जब सूखता दिख रहा है, तब तुम बाहर निकलने के लिए आकुल-व्याकुल हो रहे हो।
कहा था, सदा सहज और स्वस्थ रहो। पर तुम जीवन भर कृत्रिम और जटिल बने रहे। चेहरे पर चेहरा लगाए घूमते रहे। कहते थे कि विश्व एक रंगमंच है। जीवन एक नाटक है। और हम उसके पात्र। वह तुम्हारा अहम् था वत्स! और अब असली चेहरा जब सामने आया तो चेहरे पर वास्तविक मास्क लगाने को विवश होना पड़ा है। काश! तुमने नकली मास्क न लगाए होते। रीअल लाईफ जी होती। रील लाईफ न जी होती तो आज तुम्हें अपना असली चेहरा छिपाने के लिए मास्क न लगाना पड़ता।
कहा था, राग-द्वेष से दूर रहो। पर तुम न माने। जिनसे राग रखना था, उनसे द्वेष रखते रहे और जिनसे द्वेष रखना था, उनसे राग रखते रहे। कहते थे कि दिल है कि मानता नहीं। अब सोशल डिस्टेंसिंग में जब न राग काम का रहा न द्वेष, तब तुम पछता रहे हो।
शुक्र मनाओ वत्स! अभी चिड़िया ने पूरा खेत चुगा नहीं है। फसल अभी बाकी है। इसलिए उठो और जागो।
अचानक अलार्म बजा और मैं जाग गया। पर मैं वास्तव में जागा या नहीं, मुझे नहीं पता।

प्रसिद्ध चित्रकार
संदीप राशिनकर
की विशेष कलाकृतियाँ

प्रकृति के हमराह

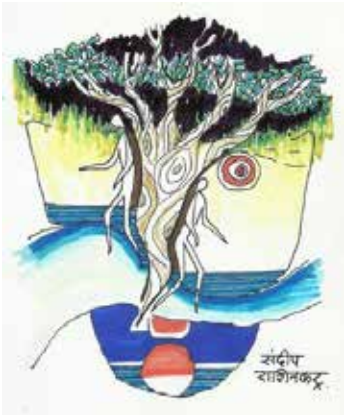

कृष्णा श्रीवास्तव

सरला नारायण ट्रस्ट द्वारा आयोजित 'प्रयास' सीजन–5

नवंबर माह का विषय

यथैधांसि समिद्धोगनिर्भस्म सात्कुरुते अर्जुन।
ज्ञानअग्नि: सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।।
– श्रीमद् भगवत गीता, अध्याय 4/37
(हे अर्जुन, जैसे अग्नि ईंधनों को भस्मकर देती है
वैसे ही ज्ञान रूप अग्नि सम्पूर्ण कर्मों को भस्म कर देती है)

गीत

ज्ञान दीपक को जलाना ही अटल उनवान है।
जन्म मानव का मिला जो ईश का वरदान है।

कर्म करना ही मनुज इस जिन्दगी का सार है।
है अमिट पहचान ये सबसे बड़ा उपहार है।
बात यह ध्यातव्य पावन है उचित संकल्पना –
कर्म बिन अस्तित्व मानव इस धरा पर भार है।
कर्म से होता सदा हर लक्ष्य का संधान है।

अग्नि पावन होम में ज्यों शाप को देती जला।
ज्ञान की अनुभूति त्यों संताप को देती जला।
सत्य है शाश्वत यही अरु ज्ञान का यह मूल है –
पुण्यता को साथ रख वह पाप को देती जला।
पाठ जिसने ये पढ़ा वो सर्वथा धनवान है।

पर अडिग प्रारब्ध सबको ही सदा छलता रहा।
सृष्टि के आरम्भ से ही गर्भ में पलता रहा।
देवता, दानव, मनुज इससे पराजित हो गए –
मस्त अपनी चाल से निर्बाध वह चलता रहा।
इस धरा पर भाग्य का जीवित अभी अभिमान है।

दूर कर सारा तमस उर गेह आलोकित करे।
प्रेम का कर आचमन संसार को मोहित करे।
त्याग कर निज स्वार्थ की सारी यहाँ दुर्भावना –
श्रेष्ठतम परमार्थ को ही सदा शोभित करे।
सर्व सुख की कामना अंतर्वलित प्रतिमान है।

वेद, गीता, उपनिषद हर ग्रन्थ का यह मूल है।
कर्मयोगी को भले चुभता यहाँ पर शूल है।
अनवरत गतिमान पर रहता सदा जो लोक में –
वह जगत में देव प्रिय अपराजिता का फूल है।
चिर अमिट इस धारणा से ही जुड़ा सम्मान है।

संगीत से बढ़कर ऐसा कोई स्पर्श नहीं जो आपके 'अंतर्मन' को झंकृत न कर दे।

इस स्तंभ में हम संगीत के ऑडियो लिंक प्रेषित करेंगे।

अपना हेडफोन उठाइए, उसे मोबाइल से जोड़िए और अपने पसंदीदा विषय के चिह्न को क्लिक करिए और पहुँच जाइए एक अलग ही दुनिया में।

Intuition
ओशो के ऑडिटोरियम की प्रसिद्ध संगीत धुन

बिस्मिल्ला खान
द बेस्ट ऑफ बिसमिल्ला खान (शहनाई)

हरिप्रसाद चौरसिया
राग जयजयवंती (बांसुरी)

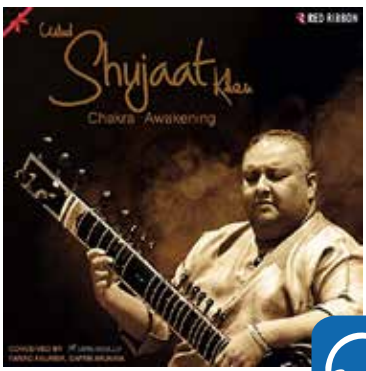

उस्ताद शुजात खान
मेडली (सितार)

राग–रागिनियों का रोगों पर प्रभाव होता है...

हम बरसों से सुनते आए हैं कि बड़े-बड़े संगीतज्ञ जब विशिष्ट राग रागिनियाँ छेड़ते थे तो वर्षा हो जाती थी, दीपक जल जाते थे इत्यादि। क्या वास्तव में संगीत में इतना प्रभाव होता है?

संगीत पर पूरे विश्व में रिसर्च और खोजें हो रही हैं; पूरे भारतवर्ष में संगीत का एकमात्र रिसर्च इंस्टिट्यूट इस दिशा में कार्य कर रहा है। वह विभिन्न रागों के शरीर पर होने वाले प्रभाव पर रिसर्च कर रहा है। लेकिन यह सच है कि कई जगहों पर संगीत के अद्‌भुत प्रभाव देखने के प्रमाण भी मिले हैं।

इन रागों की सी.डी. बाजार में उपलब्ध है या आप इन्हें यू ट्यूब से भी डाउनलोड कर सकते हैं। आप संगीतकार की प्रसिद्धि व नाम पर नहीं, वरन अपने काल पर विश्वास करें और जो आपको प्रीतिकर और लाभकर लगे, उसे सुने। गायन के स्थान पर वाद्य संगीत को प्रमुखता दें।

विविध राग और उनका रोगों पर प्रभाव

- **आनन्द भैरव अहिर भैरव तोडी** – उच्च रक्तचाप
- **बागेश्री, दरबारी** – अनिद्रा
- **दरबारी सारंग** – हृदय रोग
- **विहाग, मधुवंती** – मनोरोग, डिप्रेशन
- **सिंधु भैरवी** – शांति, प्रसन्नता
- **दरबारी कानडा, जयजयवंती** – सिरदर्द
- **भैरवी, मल्हार** – अस्थमा
- **मालकौंस, जोनपुरी** – गैस

KAVIGRAM
कविग्राम

चिराग जैन

'कविग्राम' के पुराने चावल प्रगल्भ के चुनिंदा प्रसिद्ध कवियों के विडियो प्रेषित हैं। विशेषकर उन कवियों के जिनके जन्मदिन या पुण्यतिथि इस पखवाड़े आ रहे हैं।

गीत की बात चले और श्री भारत भूषण जी का नाम न आए, ऐसा लगभग असंभव है। गीत के चितेरे श्री भारत भूषण जी के गीत आज भी काव्य प्रेमियों के एकाकी क्षणों के संगी हैं। इस वीडियो में सुनिये उनका गीत 'राम की जल-समाधि' जिसने लोकप्रियता के कीर्तिमान स्थापित किये

श्री भारत भूषण

पुण्यतिथि : १७ दिसम्बर २०११

श्री गोविन्द व्यास

जन्मदिन : १९ दिसम्बर १९४५

व्यंग्य और विचार को एक साथ गूँथ कर काव्य की वेणी तैयार करने वाले डॉ. गोविन्द व्यास की कविता व्यवस्था तथा विद्रुपता पर बेखटके चोट करने की क्षमता रखती है। मानवीय संवेदना की पुष्टि के लिए वैचारिक गुड़ाई करते हुए इस काव्यपाठ को सुनें और आत्म-अवलोकन की ओर तत्पर हों।

व्यंग्य के आकाश के सबसे दैदीप्यमान नक्षत्र को यह संसार श्री माणिक वर्मा के नाम से जानता है। उनकी तीखी लेखनी ने राजनीति, समाज और मानसिकताओं को दर्पण दिखाने में कभी कोई चूक नहीं की। यह वीडियो उस भारतीय परंपरा का उदाहरण है, जिसमें उलाहने के बहाने ठहाकों के यान पर आत्मचिंतन का सागर पार किया जाता है

श्री माणिक वर्मा

जयंती : २५ दिसम्बर १९३८

हमारा गौरव

देश के प्रतिष्ठित समाचार पत्र

राजस्थान पत्रिका

के ९ राज्यों के ३८ संस्करणों में

आपकी पुष्पांजलि की समीक्षा का प्रकाशन

अत्यंत गौरव की बात है।

बधाई!

नई तकनीक के साथ हिन्दी साहित्य

पुष्पांजलि

सम्पादक : गोविंद भूँदड़ा

तमिलनाडु जैसे अहिंदी भाषी राज्य की राजधानी चेन्नई से पाक्षिक साहित्यिक मोबाइल पत्रिका 'पुष्पांजलि' का प्रकाशन होता है। यह पत्रिका पठनीय भी है और श्रवणीय भी। और स्मरणीय अवसरों पर कुछ चर्चित लेखकों की कृतियों का पॉकेट पुस्तकालय भी है।

इस नई पाक्षिक इ-पत्रिका 'पुष्पांजलि' के छह अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित कई रचनाओं के साथ उन रचनाकारों के वीडियो लिंक भी दिए गए हैं, जिनसे पाठक उस रचनाकार को देख व सुन भी सकते हैं। इस पत्रिका में कुछ लेखकों की पुस्तकों के लिंक भी दिए हैं जिनके जरिए पाठक उस पुस्तक को खोलकर पढ़ सकते हैं।

इसके 'अंतर्वीणा' स्तंभ के अंतर्गत प्रसिद्ध संगीतकारों की मधुर संगीत रश्मियां पाठकों को अलग ही भावदशा में ले जा पाने में समर्थ हैं। पत्रिका निःशुल्क है। नवंबर माह 2020 के प्रथम अंक में देश की वर्तमान निराशाजनक स्थिति में महाकवि स्व. नीरज की कविता 'मेरे देश निराश न हो, फिर दीप जलेगा, तिमिर ढलेगा', स्व. कृष्ण बिहारी नूर के जन्मदिन पर उनकी प्रसिद्ध रचना 'जिंदगी से बड़ी सजा ही नहीं' सम्मिलित की गई है। इसी प्रकार उनकी रचना 'क्या जुर्म है पता ही नहीं' को उनके जरिए ही मंच पर प्रस्तुत वीडियो व इसी गजल को प्रसिद्ध सितार वादक सुजात खान का गाया गया, वीडियो प्रस्तुत किया गया है।

स्व. के.पी. सक्सेना की पुण्य तिथि पर उनकी एक व्यंग्य रचना व एक निबंध पाठ करते हुए वीडियो 'बैंक लॉकर' दिया गया है। इस अंक में माया गोविंद का गीत व उनके काव्य पाठ का वीडियो, चित्रकार संदीप राशिनकर के स्केच, लघुकथाएं, व्यंग्य आदि शामिल हैं। जो लोगों का पसंद आएगा।

-बी.एल. आच्छा

प्रेरणा दर्पण साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच द्वारा नई दिल्ली के हिन्दी भवन में आयोजित समारोह में डॉ. कीर्ति काले युवा गीतकार सम्मान सुश्री मनीषा शक्ला को प्रदान किया गया। सुरेन्द्र दुबे स्मृति हास्य गौरव सम्मान दिया गया श्री विनोद पाण्डे को।

विश्व रंग 2020, कनाडा में मंचित नाटक 'अश्वत्थामा' और 'चीफ की दावत' का वीडियो श्री रामेश्वर जी कम्बोज द्वारा प्रेषित

विभिन्न साहित्यिक–सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों से एक आग्रह..

आप पुष्पांजलि अपने सदस्यों को नि:शुल्क **FORWARD** कर सकते हैं।

हम पत्रिका के साथ आपकी संस्था की तरफ से एक पत्र भी डिजाइन करवा कर आपको भिजवा सकते हैं जिसके साथ आपको पत्रिका उन्हें भेज देनी है। आपके पत्र के साथ पत्रिका पाकर वे प्रसन्न भी होंगे और आपके धन्यवादी भी।

हमें लिखें,

8610502230 (केवल संदेश हेतु)

पुष्पांजलि के पिछले अंक

यदि आपने पुष्पांजलि के पिछले अंकों को नहीं देखा है तो नीचे पुस्तक के चिह्न को दबाकर उन्हें देख सकते हैं।

पत्रिका खोलने के लिए क्लिक करें

पत्रिका खोलने के लिए क्लिक करें

पत्रिका खोलने के लिए क्लिक करें

पत्रिका खोलने के लिए क्लिक करें

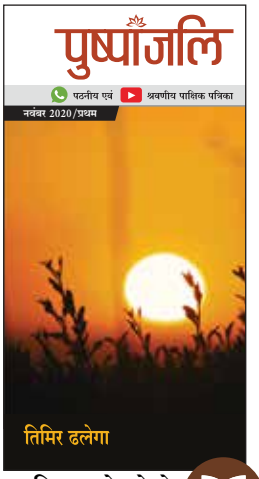

पत्रिका खोलने के लिए क्लिक करें

पत्रिका खोलने के लिए क्लिक करें

www.Pushpanjalee.com

इस चिह्न को क्लिक कर के भी आप सीधे वेबसाइट पर जा सकते हैं।

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ

पुष्पांजलि का नवम्बर अंक पढ़ा, शानदार संग्रह, एक-एक शब्द पढ़ने का मन हुआ, मन को शांति मिलती है पढ़कर। सभी रचनाएँ श्रेष्ठ हैं। आगामी भविष्य में भी इसी प्रकार पुष्पांजलि मिलती रहेगी, बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ आदरणीय संपादक जी को...

विजेन्द्र परसाई, इंदौर

साहित्यिक इतिहास में, मैंने इतनी बेहतर, शानदार, आधुनिक तकनीकी दक्षता से युक्त पत्रिका नहीं देखी। शब्द, भाषा, विषय चयन, विशुद्ध साहित्य के साथ-साथ ही सम्पादक जी का सहज, सरल, भोलापन, स्पष्ट विचार भाव... अद्वितीय... ईश्वर इसे जीवनपर्यन्त निरन्तरता दे।

सीए एस एन गोयल, इंदौर (म.प्र.)

बहुत सुंदर प्रयास है आपका। यह अपनी तरह की अनूठी पत्रिका है। आपका हर काम बिलकुल अलग हट कर होता है। मैंने आपकी डिजिटल पत्रिका को प्रसारित कर दिया है।

ज्ञानचंद मर्मज्ञ, बैंगलोर

इतने लघु काल में 'पुष्पांजलि' बहुआयामी एवं सारगर्भित ई-पत्रिका ने जो छवि बनाई है वो बहुत ही सराहनीय है। पत्रिका पठनीय, श्रवणीय, दर्शनीय है, अति सुन्दर है एवं वैसा ही सुन्दर पत्रिका का कलेवर है। पत्रिका अन्तर मन को तृप्त कर देती है। कन्टेनर एवं कन्टेन्ट की सुन्दर ताल व लयबंदी हमें स्वत: ही प्रशंसा करने को प्रेरित करती है। पत्रिका का अगला अंक प्यारे सद्गुरु ओशो पर केन्द्रित कर आपने अपनी वैचारिक परिपक्वता का श्रेष्ठ प्रदर्शन किया है, जो कि आपके अपने विचारों के भावों की सुगंध से सभी के मन को महकायेगा।

कमल नयन भट्ट, सम्पादक, ओशो शून्य के पार

प्रिय पाठकों,

हमें बहुत सुखद लगता है जब पत्रिका की प्रशंसा में प्रतिक्रियाएँ प्राप्त होती हैं, जिनसे पत्रिका के निर्माण में आई थकन दूर हो जाती है। हम चाहते हैं कि हमारे पाठक हमें यह भी बताएँ कि उन्हें क्या अच्छा लग रहा है। आपकी पसंद हमारी पत्रिका की सामग्री के चयन में बहुत सहयोगी होगी।

पत्रिका को और बेहतर बनाने की दिशा में आपके सुझावों का भी स्वागत है।

पुरुषार्थ फाउन्डेशन एवं पुष्पांजलि

का संयुक्त आयोजन

दक्षिण में गीतों पर आधारित वार्षिक कार्यक्रम की श्रृंखला का उद्घाटन एवं राष्ट्रीय कवि सम्मेलन

अध्यक्ष

डॉ. सागर त्रिपाठी, मुंबई

उद्घाटनकर्ता

डॉ. विष्णु सक्सेना, आगरा
डॉ. कीर्ति काले, दिल्ली

सान्निध्य

डॉ. प्रेम तन्मय, बेंगलुरु
किशोर तिवारी, रायपुर

शनिवार, 12 दिसम्बर 2020
रात्रि 8.00 बजे से
zoom online

पुष्पांजलि के सदस्यों को पासवर्ड कार्यक्रम दिवस को प्रात:काल भेज दिये जायेंगे। अन्य श्रोता पासवर्ड के लिए नीचे चिह्न को क्लिक करके अथवा मोबाइल नं. 8610502230 पर संदेश भेज सकते हैं।

आदित्य शुक्ल
संयोजक

गोविंद मूँदड़ा
संचालक